RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
सितंबर
20
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

By Ankit Avasthi Sir

अमेरिकी फेड ब्याज दर में कटौती / US Fed Rate Cut

संदर्भ:

अमेरिकी केंद्रीय बैंक की फेडरल ओपन मार्केट कमेटी (FOMC) ने चेयरमैन जेरोम पॉवेल की अगुवाई में 16-17 सितंबर को हुई दो दिवसीय बैठक के बाद आज ब्याज दर घटाकर 4%-4.25% कर दी है। यह 2025 की पहली दर कटौती है।

Federal Funds Rate क्या है?

- **परिभाषा**: यह वह ब्याज दर (interest rate) है जिस पर **बैंक आपस में रातभर (overnight) के लिए पैसे उधार देते हैं** ताकि वे फेडरल रिज़र्व द्वारा तय किए गए रिज़र्व आवश्यकता (reserve requirements) को पूरा कर सकें।
- यह दर सीधे उपभोक्ताओं पर लागू नहीं होती, लेकिन यह पूरी अर्थव्यवस्था में अन्य ब्याज दरों जैसे **prime rate, mortgage rate, और consumer loans** को प्रभावित करती है।

Fed दरें क्यों घटाता है?

फेडरल रिज़र्व अपनी **dual mandate** (अधिकतम रोजगार + मूल्य स्थिरता यानी low inflation) को पूरा करने के लिए दरों में कटौती करता है। मुख्य कारण हैं:

1. **आर्थिक विकास को प्रोत्साहन:**
   - ब्याज दरें घटने से **ऋण सस्ता (cheap borrowing)** हो जाता है।
   - व्यवसाय निवेश और विस्तार करते हैं, जिससे **रोज़गार और आर्थिक गतिविधि** बढ़ सकती है।
2. **कमज़ोर श्रम बाज़ार को संभालना:** अगर **नौकरी वृद्धि घट रही हो या बेरोज़गारी बढ़ रही हो**, तो Fed दरें घटाकर hiring को बढ़ावा देने की कोशिश करता है।
3. **मंदी को रोकना:** जब आर्थिक गतिविधि बहुत धीमी हो जाती है, तो Fed मांग को बढ़ावा देने और **गहरी मंदी से बचने** के लिए दरें घटा सकता है।

Fed द्वारा Rate Cut के कारण: फेडरल रिज़र्व का मुख्य उद्देश्य (Dual Mandate) है:

- **Price Stability (मूल्य स्थिरता बनाए रखना)**
- **Maximum Employment (अधिकतम रोज़गार सुनिश्चित करना)**

1. कमज़ोर श्रम बाज़ार (Weakening Labour Market):

- अगस्त में **Non-farm payroll employment** सिर्फ़ **22,000** बढ़ी, जो अनुमान से काफ़ी कम थी।
- Fed ने माना कि **"job gains have slowed"** यानी नौकरी वृद्धि धीमी हो गई है।
- बेरोज़गारी धीरे-धीरे बढ़ रही जिससे रोज़गार पर नकारात्मक असर पड़ने का खतरा है।

2. मुद्रास्फीति का दबाव (Inflation Pressures)

- **Inflation (PCE Index)** अप्रैल में 2.2% से बढ़कर जुलाई में **2.6%** हो गई।
- इसका मतलब है कि उपभोक्ताओं द्वारा खरीदी जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं की औसत कीमतें तेज़ी से बढ़ रही हैं।

फेड रेट कट्स का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

1. पूंजी प्रवाह (Capital Flows)

- अमेरिका में दरें घटने से भारत विदेशी निवेशकों (FPI) के लिए आकर्षक बन जाता है।
- इक्विटी और बॉन्ड बाज़ार में निवेश बढ़ सकता है।
- इससे **बाज़ार में liquidity बढ़ेगी** और बॉन्ड यील्ड्स (bond yields) में कमी आ सकती है।

2. रुपये और विनिमय दर:

- कमजोर डॉलर और मज़बूत पूंजी प्रवाह से **रुपया मज़बूत (appreciate)** हो सकता है।
- लेकिन, मज़बूत रुपया भारतीय **निर्यात (exports)** के लिए नकारात्मक हो सकता है।

3. मुद्रास्फीति पर असर (Inflation Effects)

- कमजोर डॉलर से **आयातित महंगाई** कम होगी तेल और अन्य कमोडिटीज़ सस्ते होंगे।
- लेकिन विदेशी पूंजी का अधिक प्रवाह भारत में **अंदरूनी (domestic) महंगाई** को बढ़ा सकता है।

4. निर्यात और IT सेक्टर (Exports and IT Sector)

- रुपया मज़बूत होने से **निर्यात महंगा** हो जाता है, प्रतिस्पर्धा कम हो सकती है।
- IT कंपनियों की आमदनी (जो डॉलर में होती है) पर भी असर पड़ सकता है।
- हालांकि, वैश्विक व्यापार (global trade) में सुधार से कुछ नकारात्मक असर संतुलित हो सकता है।

5. व्यापक मैक्रो असर (Wider Macro Impact)

- वैश्विक क्रेडिट लागत घटने से भारत का **बाहरी ऋण (external borrowing)** बोझ कम होगा।
- भारतीय कंपनियाँ विदेश में सस्ते दरों पर **फंड जुटा पाएंगी (corporate fundraising)**।
- निवेशकों का भारत की **विकास कहानी (growth story)** पर भरोसा और मज़बूत होगा।

निष्कर्ष: अमेरिकी फेड रेट कट भारत के लिए **पूंजी प्रवाह और निवेश** की दृष्टि से सकारात्मक है, लेकिन **निर्यात और IT सेक्टर** के लिए चुनौतीपूर्ण भी हो सकता है।

2025 विश्व व्यापार रिपोर्ट / 2025 World Trade Report

संदर्भ:

विश्व व्यापार संगठन (WTO) की **विश्व व्यापार रिपोर्ट 2025** में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के वैश्विक व्यापार और आर्थिक वृद्धि पर गहरे प्रभाव को रेखांकित किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2040 तक एआई के चलते उत्पादकता में बढ़ोतरी और व्यापार लागत में कमी से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मूल्य में लगभग **40 प्रतिशत की वृद्धि** संभव है।

एआई से जुड़े प्रमुख अनुमान:

1. व्यापार वृद्धि (Trade Growth)

- 2040 तक एआई (AI) से वैश्विक वस्तु और सेवा व्यापार में लगभग **40% की बढ़ोतरी** संभव।

2. जीडीपी में बढ़ोतरी (GDP Gains)

- अलग-अलग परिदृश्यों में वैश्विक GDP में 12–13% की वृद्धि का अनुमान।

3. डिजिटल सेवाओं में तेजी (Digitally Deliverable Services)

- सबसे अधिक वृद्धि (लगभग **42%**) एआई-आधारित **डिजिटल सेवाओं** में होगी।
- इसमें AI tools, IT-enabled services जैसे सेक्टर शामिल हैं।

4. व्यापार दक्षता (Trade Efficiency): एआई से व्यापार की कार्यक्षमता कई तरह से बढ़ेगी:

- **सप्लाई चेन (supply chain)** को अधिक मज़बूत और तेज़ बनाएगा।
- **कस्टम प्रक्रिया (customs)** का ऑटोमेशन आसान होगा।
- **भाषा अवरोध (language barriers)** कम होंगे।
- **बाज़ार की जानकारी (market intelligence)** और विश्लेषण की क्षमता बढ़ेगी।

एआई-सक्षम वस्तुओं का व्यापार:

1. महत्व: एआई को सक्षम बनाने वाली वस्तुएँ जैसे **कच्चा माल (raw materials)**, **सेमीकंडक्टर** और **इंटरमीडिएट इनपुट्स** बेहद ज़रूरी हैं।

- इन वस्तुओं की उपलब्धता एआई अपनाने (AI adoption) और आर्थिक विकास को गति देती है।

2. वर्तमान स्थिति: वर्ष 2023 में एआई-सक्षम वस्तुओं का वैश्विक व्यापार लगभग 2.3 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का रहा।

3. विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए अवसर: यदि विकासशील देश अपने डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर गैप (digital infrastructure gap) को आधा कर दें और बड़े पैमाने पर एआई अपनाएँ, तो उनकी आय (incomes) में 14–15% तक की वृद्धि संभव है।

एआई व्यापार से जुड़ी चुनौतियाँ:

1. **डिजिटल डिवाइड (Digital Divide)**: यदि निम्न-आय वाले देश डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर को अपग्रेड नहीं कर पाए, तो आय असमानता और बढ़ सकती है।
2. **मार्केट एक्सेस की समस्या (Market Access Issues)**: कुछ निम्न-आय वाले देशों में एआई-सक्षम वस्तुओं पर **टैरिफ 45% तक** है, जिससे व्यापार महँगा हो जाता है।
3. **बहिष्करण का खतरा (Exclusion Risks)**: WTO ने चेताया है कि कई कामगार और पूरी अर्थव्यवस्थाएँ पीछे छूट सकती हैं, जिससे वैश्विक व्यापार तनाव (trade tensions) बढ़ सकते हैं।

नीतिगत सिफारिशें (Policy Recommendations)

1. **वैश्विक एआई गवर्नेंस:**
   - एआई से जुड़ी वस्तुओं और सेवाओं के लिए बेहतर मार्केट एक्सेस।
   - एआई से जुड़े व्यापारिक नीतियों पर अधिक पारदर्शिता और संवाद।
2. **समावेशी विकास (Inclusive Growth)**
   - डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश।
   - स्किल डेवलपमेंट (skills development) ताकि कोई देश या वर्ग पीछे न छूटे।

विश्व व्यापार रिपोर्ट: यह एक **वार्षिक प्रकाशन (annual publication)** है।

- इसमें वैश्विक व्यापार के रुझान (global trade trends), व्यापार नीति की चुनौतियाँ (trade policy challenges) और **बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली (multilateral trading system)** के कामकाज पर जानकारी दी जाती है।

जारी करने वाली संस्था: विश्व व्यापार संगठन (World Trade Organization – WTO)।

Theme 2025 (विषय 2025): "Making trade and AI work together to the benefit of all" यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) और व्यापार को सभी के हित में साथ लाना।

चाबहार पोर्ट / Chabahar Port

संदर्भ:

अमेरिका ने ईरान के चाबहार पोर्ट से जुड़ी प्रतिबंधों में दी गई छूट (sanctions waiver) को 29 सितंबर से प्रभावी रूप से वापस ले लिया है। इस कदम का सीधा असर भारत की क्षेत्रीय कनेक्टिविटी और व्यापार योजनाओं पर पड़ेगा, क्योंकि चाबहार पोर्ट भारत के लिए मध्य एशिया और अफगानिस्तान तक पहुँच का एक अहम मार्ग माना जाता है।

2018 में दी गई थी छूट:

- चाबहार बंदरगाह को 2018 में अफगानिस्तान की मदद और क्षेत्रीय विकास के लिए अमेरिका की ओर से खास छूट दी गई थी, लेकिन अब यह छूट रद्द कर दी गई है।
- भारत इस बंदरगाह का इस्तेमाल अफगानिस्तान और सेंट्रल एशिया तक पहुँचने के लिए करता है, ताकि व्यापार और कनेक्टिविटी के लिए पाकिस्तान के रास्ते पर निर्भर न रहना पड़े।

छूट खत्म होने के पीछे अमेरिकी तर्क:

- अमेरिकी अधिकारियों का कहना है कि चाबहार बंदरगाह को दी गई छूट जारी करने की परिस्थितियां अब बदल गई हैं।
- 2018 में जब यह छूट दी गई थी, तब अफगानिस्तान में एक निर्वाचित सरकार थी और पोर्ट का इस्तेमाल खाद्य और पुनर्निर्माण सामग्री के लिए किया जाता था। लेकिन 2021 में तालिबान के सत्ता में आने और भारत द्वारा पोर्ट के विस्तार तथा International North-South Transport Corridor से जोड़ने की घोषणा के बाद, अमेरिकी अधिकारियों ने चेतावनी दी कि यह परियोजना ईरान को नए वाणिज्यिक मार्ग दे सकती है।

भारत के लिए चाबहार बंदरगाह का महत्व:

- चाबहार बंदरगाह दक्षिण-पूर्वी ईरान में ओमान की खाड़ी के तट पर स्थित है और ईरान का एकमात्र गहरे पानी वाला समुद्री बंदरगाह है। यह बंदरगाह भारत, ईरान, अफगानिस्तान और मध्य एशियाई देशों के लिए व्यापार और कनेक्टिविटी का एक महत्वपूर्ण प्रवेश द्वार है।
- भारत इस बंदरगाह को अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे (INSTC) के हिस्से के रूप में विकसित कर रहा है, जो रूस और यूरोप को मध्य एशिया के माध्यम से जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण पारगमन परियोजना है। चाबहार बंदरगाह, पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह के नज़दीक स्थित होने के कारण, भारत के लिए रणनीतिक और भू-राजनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना जाता है।

चाबहार पोर्ट के बारे मे:

चाबहार पोर्ट दक्षिण-पूर्वी ईरान में स्थित है, ओमान की खाड़ी के किनारे, और यह ईरान का एकमात्र महासागरीय बंदरगाह है।

- यह दो अलग-अलग बंदरगाहों- शाहिद कलंतरी और शाहिद बेहेश्ती से मिलकर बना है। चाबहार पोर्ट पाकिस्तानी बंदरगाह ग्वादर से केवल लगभग 170 किलोमीटर पश्चिम में स्थित है।

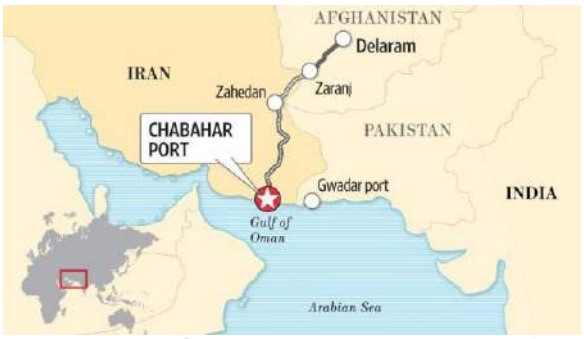

स्थान और रणनीतिक महत्व:

- चाबहार बंदरगाह, ईरान के सिस्तान-बलूचिस्तान प्रांत के मक़रान तट पर स्थित है और यह सीधे हिंद महासागर तक पहुंच वाला ईरानी बंदरगाह है।
- अफगानिस्तान और मध्य एशियाई देशों जैसे तुर्कमेनिस्तान और उज्बेकिस्तान के करीब होने के कारण इसे इन भूमि-रुद्ध देशों का "गोल्डन गेट" कहा जाता है। बंदरगाह ज़हेदान से लगभग 700 किलोमीटर दूर है, जो प्रांत की राजधानी है।
- चाबहार पोर्ट न केवल ईरान के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि भारत और मध्य एशियाई देशों के लिए भी एक रणनीतिक और आर्थिक कनेक्टिविटी हब के रूप में कार्य करता है।

चाबहार पोर्ट का विकास:

- चाबहार पोर्ट का विकास सबसे पहले 1973 में ईरान के अंतिम शाह द्वारा प्रस्तावित किया गया था, लेकिन 1979 की ईरानी क्रांति के कारण यह कार्य स्थगित हो गया। पोर्ट का पहला चरण 1983 में ईरान-इराक युद्ध के दौरान खोला गया, जब ईरान ने समुद्री व्यापार को फारस की खाड़ी के पोर्ट्स की बजाय पाकिस्तानी सीमा की ओर स्थानांतरित करना शुरू किया, ताकि इराकी एयर फ़ोर्स के हमलों के जोखिम को कम किया जा सके।

बांसवाड़ा न्यूक्लियर पावर प्लांट / Banswara Nuclear Power Plant

संदर्भ:

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जल्द ही राजस्थान के बांसवाड़ा जिले में प्रस्तावित **2800 मेगावाट परमाणु ऊर्जा परियोजना** की आधारशिला रखने वाले हैं। यह परियोजना **NTPC लिमिटेड और न्यूक्लियर पावर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (NPCIL)** के संयुक्त सहयोग से स्थापित की जाएगी।

2036 तक पूरी तरह ऑपरेशनल होगा माही न्यूक्लियर पावर प्रोजेक्ट:

- इस परियोजना की पहली यूनिट से बिजली उत्पादन वर्ष 2032 में शुरू होगा, जबकि दूसरी यूनिट 6 माह बाद, तीसरी 11 माह बाद और चौथी यूनिट उसके बाद स्थापित की जाएगी।
- इस क्रम में परियोजना की सभी चारों यूनिटें वर्ष 2036 तक पूरी तरह ऑपरेशनल हो जाएंगी।

कुल क्षमता 2800 मेगावाट:

- बांसवाड़ा न्यूक्लियर पावर प्रोजेक्ट की कुल उत्पादन क्षमता 2800 मेगावाट होगी। इस परियोजना की अनुमानित लागत करीब ₹45,000 करोड़ आँकी गई है। इसका निर्माण लगभग 623 हेक्टेयर भूमि पर किया जाएगा।
- परियोजना से रोजगार सृजन की दृष्टि से भी बड़ी उम्मीदें हैं। अनुमान है कि इसके चलते करीब 5,000 लोगों को प्रत्यक्ष और 20,000 लोगों को अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलेगा।

राजस्थान का पहला परमाणु ऊर्जा केंद्र - रावतभाटा परमाणु ऊर्जा स्टेशन:

- राजस्थान का पहला परमाणु ऊर्जा संयंत्र रावतभाटा (चित्तौड़गढ़ जिला) में स्थित है, जिसे प्रायः 'परमाणु नगरी' के नाम से भी जाना जाता है। यह संयंत्र 1965 में कनाडा के सहयोग से स्थापित किया गया था और इसे Rajasthan Atomic Power Station या Rajasthan Atomic Power Project कहा जाता है।
- वर्तमान में रावतभाटा में 6 यूनिटें संचालित हो रही हैं, जिनसे लगभग 1180 मेगावाट बिजली का उत्पादन हो रहा है। इसके अतिरिक्त यहाँ यूनिट-7 और यूनिट-8 का भी निर्माण किया गया है। इन दोनों से कुल 1400 मेगावाट अतिरिक्त क्षमता जुड़ जाएगी।

भारत में परिचालित परमाणु ऊर्जा संयंत्र:

भारत का परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम लगातार विस्तार कर रहा है और स्वच्छ ऊर्जा रणनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। **अप्रैल 2025** तक देश में:

- **25 परिचालित रिएक्टर**
- **8 परमाणु ऊर्जा केंद्रों** में स्थापित
- कुल **8,880 मेगावाट** की स्थापित क्षमता के साथ कार्यरत हैं।

इन सभी नागरिक परमाणु ऊर्जा संयंत्रों का स्वामित्व और संचालन **न्यूक्लियर पावर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (NPCIL)** द्वारा किया जाता है।

प्रमुख परमाणु ऊर्जा केंद्र:

- तारापुर परमाणु ऊर्जा केंद्र (महाराष्ट्र): भारत का पहला वाणिज्यिक परमाणु ऊर्जा संयंत्र।
- कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा केंद्र (तमिलनाडु): देश का सबसे बड़ा परमाणु ऊर्जा संयंत्र।
- राजस्थान परमाणु ऊर्जा केंद्र (रावतभाटा, राजस्थान)
- कैगा जनरेटिंग स्टेशन (कर्नाटक)
- काकरापार परमाणु ऊर्जा केंद्र (गुजरात)
- मद्रास परमाणु ऊर्जा केंद्र (कलपक्कम, तमिलनाडु)
- नरोरा परमाणु ऊर्जा केंद्र (उत्तर प्रदेश)
- गोरखपुर हरियाणा अनु विद्युत परियोजना (हरियाणा): निर्माणाधीन।

भविष्य की योजनाएँ: भारत में वर्तमान में 11 और रिएक्टर निर्माणाधीन हैं। इनके चालू होने से आने वाले वर्षों में देश की परमाणु बिजली उत्पादन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

भारत की परमाणु ऊर्जा क्षमता:

वर्तमान में भारत की **स्थापित परमाणु ऊर्जा क्षमता 8,880 मेगावाट** है। इसके अतिरिक्त लगभग **6,600 मेगावाट क्षमता निर्माणाधीन** है और करीब **8,000 मेगावाट क्षमता योजना के चरण में** है। इन सबको मिलाकर आने वाले वर्षों में भारत की परमाणु बिजली उत्पादन क्षमता लगभग **23,480 मेगावाट** तक पहुँचने की उम्मीद है।

हालाँकि यह प्रगति निरंतर है, लेकिन चुनौतियाँ अभी भी बड़ी हैं। वर्ष **2047 तक 100 गीगावाट (1,00,000 मेगावाट) परमाणु क्षमता** का लक्ष्य हासिल करने के लिए भारत को अभी लगभग **76,520 मेगावाट अतिरिक्त क्षमता** जोड़नी होगी।

सेबी ने अडानी समूह को हिंडनबर्ग के आरोपों से मुक्त कर दिया / Adani Group cleared of Hindenburg allegations by SEBI

संदर्भ:

हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट से जुड़े मामले में अडानी समूह और उसके चेयरमैन गौतम अडानी को बड़ी राहत मिली है। बाजार नियामक **सेबी** ने गुरुवार को अपनी जांच रिपोर्ट में कहा कि अडानी ग्रुप पर लगे आरोप साबित नहीं हुए और उन्हें क्लीन चिट दी जाती है।

सेबी ने जांच मे क्या पाया ?

18 सितंबर, 2025 को, SEBI ने अडानी एंटरप्राइजेज, अडानी पावर, अडानी पोर्ट्स & SEZ, और अडिकॉर्प एंटरप्राइजेज के खिलाफ मामलों का निपटारा करने के लिए दो अलग-अलग आदेश जारी किए।बाजार नियामक ने निष्कर्ष निकाला कि कोई संबंधित पार्टी लेनदेन (RPT) उल्लंघन या धोखाधड़ी व्यापार प्रथाएं नहीं हुईं।

- सेबी ने पाया कि अडानी पोर्ट्स ने अडिकॉर्प एंटरप्राइजेज को धन दिया था, जिसने बाद में अडानी पावर को ऋण के रूप में राशि उपलब्ध कराई।
- अडानी पावर ने यह ऋण ब्याज सहित चुका दिया।
- जांच में यह भी साफ हुआ कि न तो किसी प्रकार का गबन हुआ और न ही धोखाधड़ी।

सेबी ने दो अलग-अलग आदेश जारी करते हुए कहा कि अडानी समूह और गौतम अडानी पर लगे आरोप साबित नहीं होते और किसी तरह का नियामकीय उल्लंघन नहीं हुआ।

हिंडनबर्ग ने क्या आरोप लगाए थे?

- अमेरिका स्थित शॉर्ट-सेलर हिंडनबर्ग रिसर्च ने जनवरी 2023 में अपनी रिपोर्ट में दावा किया था कि अडानी समूह ने अडिकॉर्प एंटरप्राइजेज, माइलस्टोन ट्रेडलिंक्स और रेहवर इंफ्रास्ट्रक्चर जैसी संस्थाओं का उपयोग कर धन को एक ग्रुप कंपनी से दूसरी तक पहुँचाया।
- रिपोर्ट में कहा गया था कि ये व्यवस्थाएँ छिपे हुए संबंधित पक्ष लेनदेन (RPTs) थीं, जिनका उद्देश्य प्रकटीकरण नियमों को दरकिनार करना था।
- इस रिपोर्ट के सामने आने के बाद शेयर बाजार में भारी गिरावट दर्ज की गई और अडानी समूह की कंपनियों के बाजार मूल्य में गिरावट आई। एक समय पर यह नुकसान **100 अरब डॉलर से भी अधिक** तक पहुँच गया था।

हिंडनबर्ग कंपनी का काम क्या था?

नाथन एंडरसन द्वारा स्थापित यह कंपनी मुख्य रूप से **शेयर मार्केट, इक्विटी, क्रेडिट और डेरिवेटिव्स** पर रिसर्च करती थी। इसका उद्देश्य कंपनियों और बाजार से जुड़ी वित्तीय गतिविधियों में गड़बड़ियों का पता लगाना होता था।

इस रिसर्च के तहत कंपनी जांच करती थी कि:

- कहीं शेयर बाजार में पैसों की **हेराफेरी** तो नहीं हो रही।
- क्या बड़ी कंपनियां अपने फायदे के लिए **अकाउंट मिसमैनेजमेंट** कर रही हैं।
- क्या कोई कंपनी मार्केट में **गलत दांव लगाकर** दूसरी कंपनियों को नुकसान पहुँचा रही है।

भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI):

परिचय:

- नियामक संस्था (Regulatory body): भारत में सिक्योरिटीज़ और कमोडिटी मार्केट की।
- **अधीनता:** वित्त मंत्रालय (Ministry of Finance)।
- **मुख्यालय (HQ):** मुंबई।

स्थापना (Establishment)

- **12 अप्रैल 1988** – गैर-वैधानिक संस्था (non-statutory body)।
- **30 जनवरी 1992** – **SEBI Act, 1992** के तहत वैधानिक शक्तियाँ मिलीं।

उद्देश्य (Objective)

- निवेशकों (investors) के हितों की रक्षा।
- प्रतिभूति बाजार (securities market) का विकास।
- उद्योग का नियमन

अध्यक्ष (Chairman): सितंबर 2025 तक – तुहिन कांत पांडे

SEBI के कार्य (Functions of SEBI)

1. संरक्षणात्मक कार्य (Protective Functions)

- **इनसाइडर ट्रेडिंग रोकना:** गोपनीय जानकारी के आधार पर ट्रेडिंग पर रोक।
- **प्राइस रिगिंग पर नियंत्रण:** कृत्रिम रूप से शेयर मूल्यों में उतार-चढ़ाव रोकना।
- **फेयर ट्रेड प्रैक्टिसेज:** धोखाधड़ी और गलत प्रस्तुतीकरण रोकना।
- **निवेशक शिक्षा:** ट्रेनिंग और जागरूकता कार्यक्रम।

2. नियामक कार्य (Regulatory Functions)

- **बाजार सहभागियों का नियमन:** ब्रोकर, मर्चेंट बैंकर, सब-ब्रोकर, अंडरराइटर आदि के लिए नियम।
- **ऑडिट और निरीक्षण:** वित्तीय मध्यस्थों और स्टॉक एक्सचेंज के खातों की जाँच।
- **कंपनी टेकओवर का नियमन:** बड़े पैमाने पर शेयर अधिग्रहण और कंपनी अधिग्रहण की निगरानी।

ईवीएम मतपत्र / EVM Ballot Papers

संदर्भ:

भारत निर्वाचन आयोग (ECI) ने **निर्वाचन नियमावली, 1961 के नियम 49B** के तहत नई संशोधित दिशानिर्देश जारी किए हैं। इन बदलावों का उद्देश्य **ईवीएम (EVM) बैलेट पेपर्स को और अधिक पठनीय व स्पष्ट** बनाना है, ताकि मतदाताओं को मतदान प्रक्रिया में सुविधा मिल सके और पारदर्शिता को और मजबूत किया जा सके।

EVM बैलेट पेपर में बदलाव:

1. उम्मीदवारों की पहचान:

- अब बैलेट पेपर पर **उम्मीदवारों के रंगीन फोटो** छपेंगे (पहली बार बिहार चुनाव से)।
- फोटो में **चेहरे का हिस्सा ¾ भाग** घेरेगा ताकि स्पष्ट दिख सके।

2. क्रमांक और नाम (Numerals & Names)

- उम्मीदवारों/NOTA के क्रमांक **अंतरराष्ट्रीय स्वरूप (International form) के भारतीय अंकों में, बोल्ड, फ़ॉन्ट साइज 30** में होंगे।
- सभी नाम (उम्मीदवार/NOTA) **एक ही फ़ॉन्ट टाइप और साइज** में होंगे।

3. बैलेट पेपर की गुणवत्ता (Paper Quality)

- **70 GSM पेपर** पर बैलेट छापे जाएंगे → ज्यादा टिकाऊ।
- विधानसभा चुनाव के लिए बैलेट पेपर का **गुलाबी रंग** होगा (निर्धारित RGB values)।

कानूनी प्रावधान – धारा 49B:

1. **भाषा और विवरण:** बैलट यूनिट पर विवरण केवल उन भाषाओं में होंगे जिन्हें **ECI द्वारा तय किया गया है**।
2. **नामों का क्रम:** उम्मीदवारों के नाम उसी क्रम में होंगे जैसे **आधिकारिक सूची** में दर्ज हैं।
3. **समान नाम:** यदि दो उम्मीदवारों का नाम एक जैसा हो, तो उन्हें **व्यवसाय, निवास या अन्य पहचान** से अलग किया जाएगा।
4. **रिटर्निंग ऑफिसर की ज़िम्मेदारियाँ:**
    - उम्मीदवारों के नाम और चुनाव चिन्ह लगाना।
    - यूनिट्स को सील करना।
    - उम्मीदवारों की संख्या सेट करना।

भारत-AI प्रभाव शिखर सम्मेलन / India-AI Impact Summit

संदर्भ:

भारत सरकार ने फरवरी 2026 में नई दिल्ली के **भारत मंडपम** में आयोजित होने वाले **इंडिया-एआई इम्पैक्ट समिट 2026** के लिए लोगो और प्रमुख पहलों का अनावरण किया है। इस शिखर सम्मेलन का उद्देश्य भारत को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व की दिशा में आगे बढ़ाना और एआई आधारित नवाचार, स्टार्टअप्स तथा उद्योग-सरकार सहयोग को नई गति देना है।

India-AI Impact Summit:

परिचय (About)

- यह शिखर सम्मेलन पहले हुए वैश्विक AI सम्मेलनों की श्रृंखला पर आधारित है।
- क्रम:
    1. **Bletchley Park Summit (UK, 2023)**
    2. **Seoul Summit (South Korea, 2024)**
    3. **AI Action Summit (Paris, 2024)**
    4. **India-AI Impact Summit (India, 2025)** – इसमें "Action" से "Impact" की रणनीतिक शिफ्ट।

मुख्य बिंदु (Key Highlights)

- अब फोकस है: **ठोस परिणाम (tangible outcomes)**।
- **वैश्विक सहयोग** को मजबूत करना।
- **AI का जिम्मेदार और बड़े पैमाने पर उपयोग** सुनिश्चित करना।

आयोजन: इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY)।

उद्देश्य (Objective)

- समावेशी विकास (inclusive development)।
- सतत विकास (sustainability)।
- न्यायसंगत प्रगति (equitable progress)।

GS FOUNDATION For

UPSC & STATE PSC

- इतिहास
- अर्थव्यवस्था
- भूगोल
- भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था

1500x4
~~₹6000/-~~

₹4500/-

- रोज़ाना लाइव क्लासेस
- साप्ताहिक टेस्ट
- क्लास की पीडीएफ (हिंदी + अंग्रेज़ी में)
- लाइव डाउट सेशन
- रोज़ाना प्रैक्टिस प्रश्न

COURSE VALIDITY
1 YEAR

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
FOUNDATION COURSE
OF MUTUAL FUND
INVEST IN KNOWLEDGE GROW YOUR WEALTH
COMBO OFFERS
BBK
Baaten Bazaar ki
COURSE FEE
~~₹4000/-~~
OFFER PRICE
₹2800/-
Course Validity
1 YEAR
एक निवेश समझदारी से..

FUNDAMENTALS OF
STOCK MARKET
LEARN HOW TO TRADE
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
INVESTMENT की करो जीरो से शुरुवात
Baaten Bazar Ki

FOUNDATION COURSE OF
MUTUAL FUND
Invest in Knowledge
Grow Your Wealth
Course fee
₹1999/-
COURSE VALIDITY
1 YEAR
एक निवेश समझदारी से..

PORTFOLIO BUILDING AND MANAGEMENT COURSE

\+ **(FUNDAMENTAL OF STOCK MARKET)** FREE

EMI AVAILABLE

- » Long-Term Investing Foundations
- » Principles of Value Investing and Stock
- » Portfolio Construction Mastery
- » Sectoral Investing
- » Stock Picking Framework
- » Active Portfolio Management Techniques
- » Mega Cap vs Mid Cap Strategy

SPECIAL BONUS

COURSE VALIDITY
1 YEAR